चाय बागान की छाँव में

चितरंजन भारती।

NotNul
पढ़ना ही जिंदगी है

चाय बागान की छाँव में

चितरंजन भारती

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2026

© चितरंजन भारती

1

मिलन दो मित्रों का

एयरपोर्ट के बाहर विलियम को देख वह एकदम से ताज्जुब में पड़ गया। एकदम सोशल ऐक्टिविस्ट ज्यां द्रेज जैसा इकहरा बदन, भावुक, निश्छल चेहरा और सहज हँसी। वैसे ही सुनहरे बाल और रक्ताभ आभा लिये रंग। ढीला-ढाला कुर्ता और जिन्स की पैंट पहने उसके भोले स्वरूप को देख विश्वास ही नहीं होता था कि वह कोई ब्रिटिश विदेशी पर्यटक है। आमतौर पर हम यही मान लेते हैं कि कुछ अजीबोगरीब डिजाइन और रंगीन छींट जैसा कुछ भी पहनने वाले विदेशी होते हैं।

ऐसी बात नहीं कि आनंद ने विलियम की तस्वीरें नहीं देखी थी। सोशल मीडिया के जमाने में तस्वीरें तो क्या, वीडियो तक उपलब्ध हैं। मगर यह तो उनसे एकदम उलट है। वह तो यही सोच रहा था कि कोट-टाई लगाया कोई संभ्रांत युवक पूरे अकड़ के साथ होगा वह, जिससे उससे सँभल कर मिलना होगा। आखिर करोड़ों रूपये के चाय-पत्तों का जिसका व्यापार हो, उसे वैसा दिखना भी चाहिए। मगर वह ऐसा कुछ नहीं था।

विलियम भी आनंद को ऐसे देख रहा था कि जैसे उसे विश्वास ही न हो रहा हो कि वह उससे यहाँ पटना में मिल रहा है। वह आगे बढ़कर आनंद के गले लग गया, तो वह आश्वस्त हुआ कि नहीं, विलियम कुछ सोचकर ही यहाँ आया है! तो उसे भी

सहयोग करना ही होगा। आनंद के कसरती, गठीले बदन को निहारते हुए विलियम बोला- "बहुत बढ़िया आनंद! तुम्हारे साथ रहने से अब मुझे किसी बॉडीगार्ड की जरूरत नहीं रहेगी। लगता है, बढ़िया खाते और नियमित जिम जाते हो। सचमुच तुम किसी हिन्दी फिल्म के हीरो जैसे लगते हो। तस्वीरों में तो ऐसे दिखाई नहीं दे रहे थे।"

"अब इस उम्र में भी खाये-पिये नहीं और जिम नहीं जायें, तो क्या करें" वह हँसते हुए बोला- "और इसलिए तुम मुझे असम साथ ले जाना चाहते हो कि तुम्हें एक बॉडीगार्ड की जरूरत है, तो यही सही। वैसे सच तो यही है कि मैंने मजाक में कहा था कि मैं भी असम घूमना चाहता हूँ। मगर मेरे जाने के बारे में तुमने गंभीरता से ले लिया।"

"अब चाहे जो हो, साथ चलना है, तो चलना है।" विलियम हँसकर बोला- "तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि रॉबर्ट ब्रूस ने ब्रह्मपुत्र घाटी में 1823 को जंगलों में उगने वाले चाय के पौधों की खोज की थी। और इस प्रकार इस वर्ष इसके दो सौ साल पूरे हो रहे हैं। भारत और असम की सरकार भी अपने-अपने ढंग से कुछ विशेष कार्यक्रम कर रही है। और मैं भी इसी दिशा में कुछ खोज-खबर लेना चाह रहा हूँ कि कैसे यहाँ चाय का उत्पादन आरंभ हुआ, जिससे आज भारत में भारी मात्रा में चाय का उत्पादन होता है। तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि भारत में अभी वार्षिक लगभग 1600 मिलियन किलोग्राम चाय का उत्पादन होता है। इसी प्रकार एक आंकड़ा यह है कि भारत को इस चाय से 6000 करोड़ रूपये के विदेशी मुद्रा की आय भी होती है। भारत में तो खैर चाय की विशाल खपत है ही। अनुमानतः एक करोड़ लोग इस चाय

के उत्पादन में लगे हुए हैं। इसके आरंभ से अभी तक के काल में बहुत कुछ बदलाव आये। एक चाय बागानी समाज और संस्कृति का ही उदय हो गया। तो यही सब कुछ तो हमें देखना-समझना है।"

"ठीक है भाई मेरे" आनंद हँसकर बोला- "जैसी तुम्हारी मर्जी।"

"लेकिन इसके पहले एक प्याली चाय तो पिला दो।"

"यहाँ ऐसी क्या हड़बड़ी हो गई, जो तुम्हें यहाँ की चाय अभी इसी वक्त पीनी है। यहाँ तो हर गली-मुहल्ले में चाय की दुकान तो क्या, रेहड़ी और ठेले हैं। कहो, कहाँ की चाय पीनी है? यहाँ तो बी.ए. पास वाले की चाय से लेकर एम.बी.ए. पास तक की चाय मिलती है। काली, सफेद से लेकर मसालों तक वाली चाय मिलती है। कश्मीर के शीर चाय से लेकर कोहिमा की काली, फीकी चाय तक यहाँ मिल जायेगी। यहाँ फैशन यह है कि किसी को कुछ काम नहीं मिला, तो वह चाय की ही दुकान खोलने को सोचता है। बड़े-बड़े बिजनेसमैन से लेकर नेता-अभिनेता तक यही दावा करते हैं कि वह अपना कैरियर चाय बेचने से आरंभ किये।

"मुझे मालूम है इसलिये तो कह रहा हूँ। फिलहाल तो मुझे फुटपाथ वाली चाय पीनी है।"

आनंद ने उसे फिर से गहरी नजरों से देखा। जैसे विश्वास कर ले कि विलियम वास्तव में उससे इस तरह मिलने आ पहुँचा है। आखिर सात समंदर पार कहे जाने वाले लंदन से वह सीधा यहाँ आ रहा था। आमतौर पर हम यही मान कर चलते हैं कि जो विदेशी आता है, वह पहले ताजमहल और लाल किला देखता है। दिल्ली-आगरा-जयपुर के ट्रैंगिल टूरिस्ट प्लेस को देखता है। बहुत हुआ तो अजंता-खजुराहो के खंडहरों को देखने जायेगा। मगर यह तो सीधा लंदन से पटना चला आ रहा है। फिर यह तो क्रिश्चियन है, बौद्ध नहीं, जो यह मान लिया जाए कि वह बिहार के गया-नालंदा-राजगीर का भ्रमण करना चाहेगा। तो फिर यह कैसी ख्वाहिश है, जो यहाँ पटना चला आया है।

वह उसका हाथ पकड़ कर बाहर कार पार्किंग की ओर ले गया। वह सहज भाव से आनंद के साथ हो लिया।

"देखो भाई, मैं मिडिल क्लास फेमिली का लड़का हूँ।" वह जैसे उसे समझा रहा था- "मेरे पास अपनी कार नहीं है। टैक्सी से जाना होगा।"

"कहो, तो मैं तुम्हारे साथ पैदल ही चल चलूँ" वह अपना बैग टैक्सी से वापस निकालते हुए बोला- "मैं खुशी-खुशी पैदल चल लूँगा।"

"अब ज्यादा औपचारिकता दिखाने की जरूरत नहीं। मैंने तुम्हारे लिए एक अच्छा सा होटल देख लिया है। वैसे चाहो तो मेरे घर पर भी रूक सकते हो।"